छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल, रायपुर

शैक्षणिक सत्र 2020–21 माह दिसम्बर

असाइनमेंट – 04

कक्षा – बारहवीं

विषय – हिन्दी

पूर्णांक–20

निर्देश :– दिए गए प्रश्नों को निर्देशानुसार हल कीजिए।
Instruction :–Please attempt the question as per given instructions.

प्रश्न 1. भ्रातृशोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नरलीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रुप में रचा है। क्या आप इससे सहमत है? तर्क पूर्ण उत्तर लिखिये। **अंक–04 शब्दसीमा 75–100**

प्रश्न 2. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिये– (कोई चार) **अंक–04 शब्दसीमा 75–100**

मेघ आए बड़े बन–ठन के सँवर के।
आगे–आगे नाचती–गाती बयार चली,
दरवाजे–खिड़कियाँ खुलने लगीं गली–गली।
पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।
मेघ आए बड़े बन–ठन के सँवर के।।
पेड़ झुक झांकने लगे गरदन उचकाये,
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाये,
बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की।
बरस बाद सुधि लीन्ही –
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की।।

(क) "पाहुन" किसे कहा गया है और क्यों?
(ख) मेघ किस रुप में और कहाँ आए?
(ग) मेघों के आने पर गाँव में क्या–क्या परिवर्तन दिखाई देने लगे?
(घ) बूढ़ा पीपल किसके रुप में है? उसने क्या किया?
(ङ) "लता" कौन है? उसने क्या शिकायत की?

प्रश्न 3. जन्मजात धंधों में लगे श्रमिक कार्य कुशल क्यों नहीं बन पाते? कारण लिखिये। **अंक–03 शब्द सीमा 50–75**

प्रश्न 4. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए–।

जब–जब समाज पथ–भ्रष्ट हुआ है, तब–तब युग–सर्जक की भूमिका का निर्वाह शिक्षकों ने बखूबी किया है। आज की दशा में भी जीवन मूल्यों की रक्षा का गुरुतर दायित्व शिक्षक पर ही आ जाता है। वर्तमान स्थिति में जीवन मूल्यांक के संस्थापन

का भार शिक्षकों पर पहले की अपेक्षा अधिक हो गया है,क्योंकि आज का परिवार बालक के लिए 'सद्‌गुणों की पाठशाला' जैसी संस्था नही रह गया है, जहाँ से बालक एक संतुलित व्यक्तित्व की शिक्षा पा सके। शिक्षक विद्‌यालय परिसर में छात्र के लिए आदर्श होता है। शिक्षक के हर क्रिया–कलाप पर छात्रों की दृष्टि रहती है। प्राथमिक स्तर के छात्र तो अपने शिक्षकों के निर्देश को ब्रम्हवाक्य मानकर उनका अनुसरण करते हैं। यहाँ तक कि अपने माता–पिता की तुलना में शिक्षकों को अधिक सम्मान देते है। इस वर्ग के छात्र किसी अन्य की बातों को उतना महत्व नही देते जितना कि अपने शिक्षकों की बातों को वे महत्वपूर्ण समझतें हैं। प्राथमिक स्तर के छात्रों का चित्त निर्मल होता है। यही काल छात्रों में जीवन मूल्यों के संस्थापन का उत्तम काल है। इस अवस्था के छात्रों के स्वच्छ एवं निर्विकार मन पर शिक्षक जो भाव अंकित करना चाहें, कर सकते हैं। इस समय मन पर पड़ने वाला प्रभाव स्थायी होता है। अतः इस स्तर पर शिक्षण कार्य में लीन शिक्षकों को अपने छात्रों को छोटी–छोटी नीति परक कथाएँ सुनाकर उनमें जीवन मूल्यों का बीजारोपण करना चाहिए। **अंक–06**

शब्दसीमा 150–200

(क) समाज के भ्रष्ट होने पर शिक्षक ने क्या किया है?
(ख) जीवन मूल्यों की रक्षा का भार किस पर आता है?
(ग) छात्रों की दृष्टि किस पर रहती है?
(घ) छात्र किसकी बातों को महत्वपूर्ण मानते है?
(ङ) शिक्षक अपने छात्रों में किस प्रकार जीवन–मूल्यों का बीजारोपण कर सकते है?
(ङ) जीवन मूल्यों के संस्थापन का उत्तम काल कौन–सा है?

प्रश्न 5. जाति–प्रथा को श्रम–विभाजन का ही एक रुप न मानने के पीछे आंबेडकर के क्या तर्क है? लिखिये। **अंक–03 शब्दसीमा 50–75**